

डैनियल की पुस्तक - संख्या एक सौ तीन

भविष्यवाणी का रहस्योद्घाटन: भविष्यसूचक ढाँचों के त्रिविध अनुप्रयोग को समझना

Jeff Pippenger

2024-02-29

हम भविष्यवाणी के त्रिविध अनुप्रयोगों पर विचार कर रहे हैं। हम यह इस उद्देश्य से कर रहे हैं कि यह पहचान सकें कि जब प्रभु ने 1989 में "अंत का समय" पर सोवियत संघ के पतन के साथ दानिय्येल ग्यारह के अंतिम छह पदों की मुहर खोल दी, तो "ज्ञान में वृद्धि" उत्पन्न हुई जो परमेश्वर के लोगों की उस पीढ़ी की परीक्षा लेने के लिए थी।

और उसने कहा, हे दानिय्येल, तू चला जा; क्योंकि ये वचन अन्त के समय तक बन्द और मुहरबन्द रहेंगे। बहुत से लोग शुद्ध किए जाएंगे, और उजले किए जाएंगे, और परखे जाएंगे; परन्तु दुष्ट दुष्टता ही करते रहेंगे; और दुष्टों में से कोई न समझेगा; परन्तु बुद्धिमान समझेंगे। दानिय्येल 12:9, 10.

जब भी यहूदा के गोत्र का सिंह किसी सत्य की मुहर खोलता है, शैतान उस संदेश का विरोध करने के लिए कार्य करता है। दानिय्येल 11 के उन अंतिम पदों में प्रकट किए गए सत्यों के विरुद्ध किया गया विरोध, उन पदों से जुड़े सत्यों के और गहन अध्ययन के लिए बाध्य कर गया, ताकि प्रकट किए गए सत्यों को कमजोर करने के लिए प्रस्तावित की गई त्रुटियों के विरुद्ध एक पवित्र बचाव ठहर न सके। उस वाद-विवाद के बीच जो सिद्धांत प्रकाश में आया, उनमें से एक भविष्यवाणी के तिहरे अनुप्रयोग का सिद्धांत था। इसे प्रारंभ में इस आवश्यकता के संदर्भ में पहचाना गया कि दानिय्येल की पुस्तक में "the daily" किसका प्रतिनिधित्व करता है (मूर्ति-पूजा), और "the daily" को हटाए जाने से संबंधित सही इतिहास (508 ईस्वी) क्या है।

भविष्यवाणी के ढांचे के रूप में तीन उजाड़ करने वाली शक्तियों की पहचान, मिलराइट भविष्यवाणी-ढांचे के समानांतर थी, जिसमें पहली दो उजाड़ करने वाली शक्तियों को ही ढांचा माना गया था; और 'नित्य' को मूर्तिपूजा के रूप में मिलराइट पहचान ने दानिय्येल ग्यारह के अंतिम छह पदों के अनुरूप एक इतिहास प्रदान किया, जैसा कि सिस्टर व्हाइट ने कहा था कि होना चाहिए। इस प्रकार, 1989 में अंत के समय पर खुले हुए ज्ञान के विरुद्ध हुए प्रतिरोध ने, जैसे-जैसे ज्ञान बढ़ा, अधिक प्रकाश उत्पन्न किया, और इसने तीसरे दूत के आंदोलन के लिए ऐसे विशिष्ट नियमों की भी पहचान की, जो विलियम मिलर द्वारा पहले दूत के आंदोलन में संकलित और प्रयुक्त कुछ भविष्यसूचक नियमों के विकास के समानांतर थे।

हमने तीन रोमों, बाबुल के तीन पतनों और तीन एलिय्याह के त्रिगुणित अनुप्रयोग पर विचार किया है, और अब हम वाचा के दूत के लिए मार्ग तैयार करने वाले तीन दूतों पर ध्यान दे रहे हैं। हमने तीन रोमों और बाबुल के तीन पतनों के बीच निकट अंतर्व्यापन और समानान्तरता की पहचान की है, और इसी प्रकार तीन एलिय्याह तथा मार्ग तैयार करने वाले तीन दूतों के साथ भी निकट समानान्तरता देखी है। अंतिम दिनों में विलियम मिलर और फ्यूचर फॉर अमेरिका, दोनों ही, तीसरे एलिय्याह का प्रतिनिधित्व करते हैं और साथ ही मार्ग तैयार करने वाले तीसरे दूत का भी। यीशु सदा किसी बात के अंत को उसकी शुरुआत से समझाते हैं, और प्रथम दूत का आंदोलन तीसरे दूत के आंदोलन के समानान्तर चलता है।

“परमेश्वर ने प्रकाशितवाक्य 14 के संदेशों को भविष्यवाणी की पंक्ति में उनका स्थान दिया है, और उनका कार्य इस पृथ्वी के इतिहास के समापन तक समाप्त नहीं होना है। प्रथम और द्वितीय स्वर्गदूत के संदेश अब भी इस समय के लिए सत्य हैं, और जो इसके पश्चात आता है उसके साथ-साथ चलने वाले हैं। तृतीय स्वर्गदूत अपनी चेतावनी ऊँचे शब्द से घोषित करता है। 'इन बातों के पश्चात,' यूहन्ना ने कहा, 'मैंने एक और स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जिसके पास बड़ा अधिकार था, और पृथ्वी उसकी महिमा से प्रकाशित हो गई।' इस प्रकाशन में, तीनों संदेशों का सारा प्रकाश संयुक्त है।" The 1888 Materials, 803, 804.

पहले और दूसरे स्वर्गदूतों के आंदोलन का नेतृत्व विलियम मिलर ने किया। सिस्टर व्हाइट मिलर को "चुने हुए संदेशवाहक" के रूप में पहचानती हैं।

"विलियम मिलर शैतान के राज्य में खलबली मचा रहे थे, और परम शत्रु ने न केवल संदेश के प्रभाव को निष्प्रभावी करने का, बल्कि स्वयं संदेशवाहक को ही नष्ट कर देने का भी प्रयत्न किया।" स्पिरिट ऑफ प्रोफेसी, खंड 4, 219.

वह यह भी बताती है कि मिलर को एलिय्याह और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले दोनों का प्रतिरूप माना गया था।

"हज़ारों लोग विलियम मिलर द्वारा प्रचारित सत्य को अपनाने लगे, और संदेश की घोषणा करने के लिए एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में परमेश्वर के दास उठाए गए। यीशु के अग्रदूत यूहन्ना की तरह, इस गंभीर संदेश का प्रचार करने वालों ने यह आवश्यक समझा कि वे कुल्हाड़ी को पेड़ की जड़ पर रखें, और लोगों से आह्वान करें कि वे पश्चाताप के योग्य फल लाएँ।" Early Writings, 233.

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, जो यीशु के अनुसार दूसरे एलिय्याह थे, वाचा के दूत के लिए मार्ग तैयार करने वाला पहला दूत भी था। अतः यह स्पष्ट है कि तीसरे स्वर्गदूत का आंदोलन एक "चुना हुआ दूत" होगा। उस दूत का प्रतिरूप एलिय्याह, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला और विलियम मिलर द्वारा दर्शाया गया होगा। विलियम मिलर के साथ ये दो चुने हुए दूत प्रकाशितवाक्य अध्याय चौदह के तीन स्वर्गदूतों के आंदोलन की शुरुआत और समाप्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं, और ऐसा करते हुए, वे मिलकर तीसरे एलिय्याह के साथ-साथ उस तीसरे दूत का भी प्रतिनिधित्व करते हैं जो वाचा के दूत के लिए मार्ग तैयार करने वाला है।

आरंभ या अंत के चुने हुए संदेशवाहक के संदेश को अस्वीकार करना मृत्यु है, और Future for America का संदेश "पंक्ति पर पंक्ति" के भविष्यद्वाणीगत अनुप्रयोग पर आधारित है, जो "अंतिम वर्षा" की पद्धति है। "पंक्ति पर पंक्ति" के अनुप्रयोग के माध्यम से यह स्थापित होता है कि मिलराइट आंदोलन Future for America के आंदोलन का प्रतिरूप था। मिलराइट इतिहास का एक मार्गचिह्न विलियम मिलर हैं, "चुने हुए संदेशवाहक"। उस मार्गचिह्न को अस्वीकार करना संदेश को अस्वीकार करना है, अतः एडवेंटवाद के आरंभ और अंत द्वारा यह स्थापित है कि संदेशवाहक का अस्वीकार भी संदेश का अस्वीकार है, क्योंकि संदेश एक चुने हुए संदेशवाहक की पहचान कराता है। इसलिए, संदेश को अस्वीकार करना संदेशवाहक को अस्वीकार करना है और विपरीत भी सत्य है। नर्तक के बिना नृत्य नहीं होता।

मेरा ध्यान मसीह के प्रथम आगमन की घोषणा की ओर फिर से दिलाया गया। यूहन्ना को एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में यीशु का मार्ग तैयार करने के लिए भेजा गया था। यूहन्ना की गवाही को अस्वीकार करने वालों को यीशु की शिक्षाओं से कोई लाभ नहीं हुआ। उसके आने की भविष्यसूचना देने वाले संदेश के प्रति उनके विरोध ने उन्हें ऐसी स्थिति में ला दिया जहाँ वे यह कि वह मसीहा है, इस बात के सबसे सशक्त प्रमाणों को भी आसानी से ग्रहण नहीं कर सके। शैतान ने यूहन्ना के संदेश को अस्वीकार करने वालों को और आगे बढ़ाया कि वे मसीह को भी अस्वीकार करें और उसे क्रूस पर चढ़ाएँ। ऐसा करके उन्होंने अपने आप को ऐसी दशा में डाल लिया जहाँ वे पिन्तेकुस्त के दिन मिलने वाली उस आशीष को प्राप्त न कर सके, जो उन्हें स्वर्गीय पवित्रस्थान में प्रवेश का मार्ग सिखाती। मन्दिर का परदा फट जाना यह दिखाता था कि यहूदी बलिदान और नियम-विधियाँ अब स्वीकार नहीं किए जाएँगे। महान बलिदान चढ़ाया जा चुका था और स्वीकार भी कर लिया गया था, और पवित्र आत्मा, जो पिन्तेकुस्त के दिन उतरा, शिष्यों के मनों को पृथ्वीस्थ पवित्रस्थान से स्वर्गीय पवित्रस्थान की ओर ले गया, जहाँ यीशु अपने ही लहू के द्वारा प्रवेश कर चुका था, ताकि अपने शिष्यों पर अपने प्रायश्चित्त के लाभ उंडेल दे। परन्तु यहूदी पूर्ण अंधकार में छोड़ दिए गए। उद्धार की योजना के विषय में जो प्रकाश उन्हें मिल सकता था, वह सब उन्होंने खो दिया, और फिर भी वे अपने निरर्थक बलिदानों और भेंटों पर भरोसा करते रहे। स्वर्गीय पवित्रस्थान ने पृथ्वीस्थ की जगह ले ली थी, फिर भी उन्हें इस परिवर्तन का ज्ञान न था। अतः वे पवित्र स्थान में मसीह की मध्यस्थता से लाभान्वित नहीं हो सके।

बहुत से लोग इस भय के साथ यहूदियों के मार्ग को देखते हैं कि उन्होंने मसीह को अस्वीकार किया और क्रूस पर चढ़ाया; और जब वे उसके लज्जाजनक दुर्व्यवहार का इतिहास पढ़ते हैं, तो वे सोचते हैं कि वे उससे प्रेम करते हैं, और न तो पतरस की तरह उसे नकारते और न ही यहूदियों की तरह उसे क्रूस पर चढ़ाते। परन्तु परमेश्वर, जो सबके हृदयों को पढ़ता है, ने उस प्रेम की परीक्षा ली जो वे यीशु के प्रति अनुभव करने का दावा करते थे। समस्त स्वर्ग ने पहले स्वर्गदूत के संदेश के स्वीकार किए जाने को अत्यन्त गहन रुचि से देखा। परन्तु बहुतों ने, जो यीशु से प्रेम करने का दावा करते थे और जो क्रूस की कहानी पढ़ते समय आँसू बहाते थे, उसके आगमन के शुभ समाचार का उपहास किया। संदेश को आनन्द के साथ ग्रहण करने के बजाय उन्होंने उसे भ्रम घोषित किया। उन्होंने उन लोगों से घृणा की जो उसके प्रगटन से प्रेम करते थे और उन्हें कलीसियाओं से बाहर कर दिया। जिन्होंने पहले संदेश को अस्वीकार किया, वे दूसरे से लाभान्वित नहीं हो सके; और न ही वे आधी रात की पुकार से लाभान्वित हुए, जो उन्हें विश्वास के द्वारा यीशु के साथ स्वर्गीय पवित्रस्थान के अत्यन्त पवित्र स्थान में प्रवेश करने के लिए तैयार करने वाली थी। और पहले दो संदेशों को अस्वीकार करके उन्होंने अपनी समझ को इतना अन्धकारमय कर दिया है कि वे तीसरे स्वर्गदूत के संदेश में कोई प्रकाश नहीं देख सकते, जो अत्यन्त पवित्र स्थान में जाने का मार्ग दिखाता है। मैंने देखा कि जैसे यहूदियों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया, वैसे ही नामधारी कलीसियाओं ने इन संदेशों को क्रूस पर चढ़ा दिया है; इसलिए उन्हें अत्यन्त पवित्र स्थान में जाने के मार्ग का कोई ज्ञान नहीं है, और वे वहाँ यीशु की मध्यस्थता से लाभान्वित नहीं हो सकते। यहूदियों के समान, जो अपने निष्फल बलिदान चढ़ाते थे, वे उस कक्ष की ओर अपनी निष्फल प्रार्थनाएँ चढ़ाते हैं जिसे यीशु छोड़ चुका है; और शैतान, इस धोखे से प्रसन्न होकर, धार्मिक रूप धारण करता है, और इन कथित मसीहियों के मनो को अपनी ओर ले जाता है, अपनी शक्ति, अपने चिन्हों और झूठे चमत्कारों के साथ काम करते हुए, ताकि उन्हें अपने फन्दे में जकड़ दे। प्रारम्भिक लेखन, 259-261.

"जिन्होंने यहून्ना की गवाही को अस्वीकार किया, वे यीशु की शिक्षाओं से लाभान्वित नहीं हुए," और "जिन्होंने प्रथम संदेश को अस्वीकार किया, वे दूसरे से लाभान्वित नहीं हो सकते थे; और न ही वे मध्यरात्रि की पुकार से लाभान्वित हुए।" यहून्ना की सेवकाई मसीह के बपतिस्मा से पहले थी; उन्होंने इसके थोड़े ही बाद अपनी सेवकाई के आरंभ में मंदिर को शुद्ध किया। मिलर की सेवकाई ने 22 अक्टूबर, 1844 को मसीह के आकस्मिक आगमन पर, मसीह द्वारा लेवी के पुत्रों को शुद्ध करने हेतु तैयारी की। इन दोनों गवाहों में से किसी के भी मामले में, मार्ग तैयार करने वाले दूत को अस्वीकार करना मृत्यु के बराबर है।

वाचा के दूत के रूप में अपने कार्य में मसीह द्वारा सम्पन्न किया गया परिशोधन और शुद्धिकरण इस उद्देश्य के लिए था कि एक ऐसी प्रजा उठाई जाए जो उद्धार का संदेश संसार तक पहुँचाने का कार्य पूरा करे। यह कार्य उस काल से पहले पूरा किया जाता है जो कार्यकारी न्याय के आरंभ का प्रतिनिधित्व करता है। शिष्यों के इतिहास में यरूशलेम का विनाश कार्यकारी न्याय का प्रतिनिधित्व करता है, और एडवेंटादी उस कार्य को पूरा करने की अपनी जिम्मेदारी से विमुख हो गए, परन्तु प्रभु ने उन्हें एकत्र करने का प्रयास किया था। उन्होंने अपने लोगों का मार्गदर्शन किया था कि वे सन 1850 का चार्ट प्रकाशित करें, जो उस संदेश की चित्रात्मक प्रस्तुति था जिसे वे संसार तक पहुँचा सकते थे।

यह परमेश्वर की इच्छा नहीं थी कि इस्राएल चालीस वर्षों तक जंगल में भटके; वह उन्हें सीधे कनान देश में ले जाकर वहाँ एक पवित्र, सुखी प्रजा के रूप में स्थापित करना चाहता था। परन्तु 'अविश्वास के कारण वे प्रवेश न कर सके।' इब्रानियों 3:19। अपने पतन और धर्मत्याग के कारण वे जंगल में नाश हो गए, और प्रतिज्ञात देश में प्रवेश करने के लिए अन्य लोग उठाए गए। इसी प्रकार, यह परमेश्वर की इच्छा नहीं थी कि मसीह का आगमन इतना लंबा विलंबित हो और उसके लोग पाप और शोक से भरी इस दुनिया में इतने वर्षों तक बने रहें। परन्तु अविश्वास ने उन्हें परमेश्वर से अलग कर दिया। क्योंकि उन्होंने वह कार्य करने से इनकार किया जो उसने उन्हें सौंपा था, इसलिए संदेश का प्रचार करने के लिए अन्य लोग उठाए गए। संसार पर दया के कारण, यीशु अपने आगमन में विलंब करता है, ताकि पापियों को चेतावनी सुनने का अवसर मिले और परमेश्वर का क्रोध उंडेला जाने से पहले वे उसमें शरण पा सकें। महान विवाद, 458.

यदि एडवेंटिज़्म अपने विश्वास पर अडिग रहा होता, "उनका कार्य पूरा हो गया होता।"

"यदि 1844 की महान निराशा के बाद एडवेंटिस्टों ने अपने विश्वास को दृढ़ता से थामे रखा होता और परमेश्वर के खुलते हुए प्रबंध में एकजुट होकर आगे बढ़े होते, तीसरे स्वर्गदूत का संदेश स्वीकार करके और पवित्र आत्मा की शक्ति में उसे संसार को प्रचार करते, तो वे परमेश्वर का उद्धार देख लेते; प्रभु उनके प्रयासों के साथ सामर्थ्य से कार्य करता, कार्य पूरा हो गया होता, और अपने लोगों को उनका प्रतिफल देने के लिए मसीह अब तक आ चुका होता। परन्तु उस निराशा के बाद आए संदेह और अनिश्चितता के काल में, बहुत से एडवेंट विश्वासियों ने अपना विश्वास छोड़ दिया. . . . इस प्रकार कार्य में बाधा पड़ी, और संसार अंधकार में छोड़ दिया गया। यदि समूचा एडवेंटिस्ट समुदाय परमेश्वर की आज्ञाओं और यीशु के विश्वास पर एक हो जाता, तो हमारा इतिहास कितना भिन्न होता!" *Evangelism*, 695.

1844 के वसंत में, वाचा के दूत ने मिलराइटों के आंदोलन को शुद्ध किया, और फिर पतझड़ में तीसरे स्वर्गदूत का संदेश लेकर आया। मिलर, उसका संदेश और वह आंदोलन जिसका वह प्रतिनिधित्व करता था, ने दस कुंवारियों के दृष्टान्त को पूरा कर दिया था। एक्सेटर, न्यू हैम्पशायर के कैंप मीटिंग में "आधी रात की पुकार" का संदेश पहुँचा और केवल दो महीनों में यह प्रदर्शित हो गया कि किन कुंवारियों के पास तेल था। दोनों वर्ग प्रकट हो गए, और तीसरा स्वर्गदूत अपने हाथ में एक ऐसा संदेश लेकर आया जिसे खाया जाना था, परन्तु बुद्धिमान कुंवारियों ने "संदेह और अनिश्चितता की अवधि" में "अपने विश्वास को छोड़ दिया"।

"संशय और अनिश्चितता की अवधि" का प्रतिनिधित्व उनकी मृत्यु के समय शिष्यों द्वारा किया गया था, परन्तु तीसरे दिन उन्होंने अपने शिष्यों के सामने अपने पुनरुत्थान का संदेश उद्घाटित करना प्रारंभ किया, और उन्होंने "अपने विश्वास का परित्याग" नहीं किया। पहले और दूसरे स्वर्गदूतों के संदेशों के आंदोलन की बुद्धिमान कुंवारियों के लिए संशय और अनिश्चितता की यह अवधि लगभग तीन वर्षों तक जारी रही, तब प्रभु ने सिस्टर व्हाइट को यह प्रकट किया कि उन्होंने अपनी प्रजा के बचे हुए लोगों को फिर से इकट्ठा करने के लिए अपना हाथ बढ़ाया था। उन्होंने अपनी प्रजा को अपना प्रकाशन कार्य आरंभ करने और हबक्कूक की दूसरी तालिका तैयार करने के लिए मार्गदर्शन किया, परन्तु "अनेक एडवेंट विश्वासियों ने अपना विश्वास छोड़ दिया इस प्रकार कार्य में बाधा पड़ी, और संसार अंधकार में छोड़ दिया गया।"

1849 में, पहले और दूसरे स्वर्गदूतों के संदेश के चुने हुए संदेशवाहक विलियम मिलर को विश्राम दिया गया। यदि 22 अक्टूबर, 1844 की बुद्धिमान कुंवारियों ने 'अपने विश्वास को दृढ़ता से थामा होता और परमेश्वर के प्रकट होते प्रविधान में एकजुट होकर आगे बढ़ी होती,' तो प्रभु एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ्य में एक और दूत को उठा खड़ा करते। इसके बजाय 'मसीह का आगमन' 'विलंबित किया गया और उसकी प्रजा' प्राचीन इस्राएल की 'भाँति' 'पाप और दुःख की इस दुनिया में' 'कई वर्षों तक' 'ठहरी' रहती।

1863 के विद्रोह के एक सौ छब्बीस वर्ष बाद, प्रभु ने तीसरे स्वर्गदूत के चुने हुए संदेशवाहक को उठाया। उसका कार्य यह था कि वह वाचा के दूत के अपने मंदिर में अचानक आने के लिए मार्ग तैयार करे और अन्वेषणात्मक न्याय के अंतिम दृश्यों के दौरान एक लाख चवालीस हजार के साथ वाचा-संबंध में प्रवेश करे; साथ ही यह भी कि वह एक ऐसा संदेश प्रस्तुत करे जो कार्यकारी न्याय के काल में, जो शीघ्र आने वाले रविवार के कानून से प्रारंभ होता है, अहाब, ईज़ेबेल और उसके नबियों के त्रिविध संघ का सामना करे।

मार्ग तैयार करने वाला तीसरा दूत अन्वेषण न्याय के समापन चरणों के दौरान एक कार्य, एक संदेश, एक दूत और एक आंदोलन का प्रतिनिधित्व करता है। तीसरा एलिय्याह कार्यकारी न्याय के समापन चरणों के दौरान एक कार्य, एक संदेश, एक दूत और एक आंदोलन का प्रतिनिधित्व करता है। मार्ग तैयार करने वाले दूत का संदेश, और एलिय्याह का संदेश, प्रकाशितवाक्य के अध्याय आठ से ग्यारह तक की तीन हायों में से तीसरी हाय का संदेश है।

उस इतिहास में जो मार्ग तैयार करने वाले दूत द्वारा दर्शाया गया है, तीसरे "हाय" का संदेश उस "तुरही" का प्रतिनिधित्व करता है, जो लाओदीकियाई एडवेंटवाद को यह पुकार कर बुलाती है: "आग में तपा हुआ सोना मुझसे खरीद, कि तू धनी हो जाए; और श्वेत वस्त्र, कि तू पहन ले, और तेरी नग्नता की लज्जा प्रकट न हो; और अपनी आँखों

में आँजनी लगा, कि तू देख सके।" यह परमेश्वर के प्रेम का संदेश है जो परमेश्वर की प्रजा को उनके अपराध दिखाता है, क्योंकि "जितनों" से वह प्रेम करता है, वह उन्हें "डाँटता और ताड़ना देता है।" यह मसीह की धार्मिकता का संदेश है जो मनुष्यों को उसके चरित्र को स्वीकार करने के लिए बुलाता है, जो उस समयावधि में प्रकट होता है जब "वाचा का दूत" आत्मिक मंदिर को शुद्ध करने का कार्य कर रहा होता है, और इसलिए वह जिनसे वह प्रेम करता है उन्हें अपना चरित्र प्रकट करने और "इसलिए उत्साही हो, और मन फिराओ" कहकर बुलाता है, क्योंकि वह "व्यवस्था-काल" के "द्वार" पर है, जो अनुग्रह-काल के समापन का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ वह लाओदीकियाई एडवेंटावाद को अपने "मुँह" से "उगल" कर "बाहर" कर देगा। वह "व्यवस्था-काल" वाला "द्वार" वही द्वार है जिसे वह "खोलता है, और कोई बन्द नहीं कर सकता; और बन्द करता है, और कोई खोल नहीं सकता।"

एक प्रतीत होने वाला विरोधाभास है, जो 'पंक्ति पर पंक्ति' के अनुप्रयोग से सुलझ जाता है, पर बहुत से लोग उस विरोधाभास को पहचान भी नहीं पाते। जब यह सुलझता है, तो यह अन्वेषण न्याय से कार्यान्वयन न्याय की ओर होने वाले संक्रमण को अधिक स्पष्ट कर देता है, जो शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय घटित होता है। यह इस बात को स्वीकार करने से सुलझता है कि पिन्तेकुस्त संयुक्त राज्य अमेरिका में शीघ्र आने वाले रविवार के कानून का प्रतीक है। मार्ग तैयार करने वाले तीसरे संदेशवाहक को अन्वेषण न्याय में एक प्रतीक के रूप में, और इसके विपरीत कार्यान्वयन न्याय के प्रतीक के रूप में तीसरे एलिय्याह के विषय पर हमारे विचार को अंतिम रूप देने के लिए, हम इस प्रतीत होने वाले विरोधाभास को संबोधित करेंगे।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

"जो स्वर्गदूत तीसरे स्वर्गदूत के संदेश की घोषणा में एक हो जाता है, वह अपनी महिमा से सारी पृथ्वी को प्रकाशित करने वाला है। यहाँ एक ऐसे कार्य की भविष्यवाणी की गई है जो विश्वव्यापी विस्तार और असाधारण सामर्थ्य का होगा। 1840-44 का आगमन आंदोलन परमेश्वर की सामर्थ्य का एक महिमामय प्रकट होना था; पहले स्वर्गदूत का संदेश संसार के प्रत्येक मिशन-स्टेशन तक पहुँचाया गया, और कुछ देशों में वैसी महानतम धार्मिक रुचि देखी गई जैसी सोलहवीं शताब्दी के धर्म-सुधार के बाद से किसी भी देश में नहीं देखी गई थी; परन्तु तीसरे स्वर्गदूत की अंतिम चेतावनी के अधीन होने वाले प्रबल आंदोलन द्वारा इन सब से बढ़कर बातें प्रकट होंगी।"

"यह कार्य पिन्तेकुस्त के दिन के कार्य के समान होगा। जैसे सुसमाचार के आरम्भ में पवित्र आत्मा के उंडेले जाने में 'पहली वर्षा' दी गई थी, ताकि बहुमूल्य बीज अंकुरित हो उठे, वैसे ही उसके अंत में फसल के पकने के लिए 'पिछली वर्षा' दी जाएगी। 'तब यदि हम यहोवा को जानने के लिये यत्न करते रहें, तो हम जान लेंगे; उसका प्रगट होना भोर के समान निश्चित है; और वह वर्षा के समान, वरन पृथ्वी पर होने वाली पिछली और पहली वर्षा के समान हमारे पास आएगा।' होशे 6:3। 'हे सिध्दोन के सन्तानो, मगन हो, और अपने परमेश्वर यहोवा में आनन्दित हो; क्योंकि उसने तुम्हारे लिये पहली वर्षा उचित परिमाण में दी है, और वह तुम्हारे लिये वर्षा, अर्थात् पहली और पिछली वर्षा, बरसाएगा।' योएल 2:23। 'अन्त के दिनों में परमेश्वर कहता है, कि मैं अपना आत्मा सब प्राणियों पर उंडेलूँगा।' 'और ऐसा होगा कि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।' प्रेरितों के काम 2:17, 21।"

सुसमाचार का महान कार्य इस प्रकार समाप्त नहीं होगा कि परमेश्वर की शक्ति का प्रगटीकरण उसके आरंभ में जितना था, उससे कम हो। सुसमाचार के आरंभ में 'पूर्व वर्षा' के उंडेले जाने में जो भविष्यवाणियाँ पूरी हुई थीं, वे उसके अंत में 'अंतिम वर्षा' में फिर से पूरी होंगी। यही वे 'ताज़गी के समय' हैं, जिनकी ओर प्रेरित पतरस ने दृष्टि रखी, जब उसने कहा: 'इस कारण मन फिराओ और परिवर्तित हो जाओ, ताकि तुम्हारे पाप मिटाए जाएँ, जब प्रभु की उपस्थिति से ताज़गी के समय आएँगे; और वह यीशु को भेजेगा।' प्रेरितों के काम 3:19, 20। महान विवाद, 611।